

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश

“चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 26 नवम्बर, 2021 को ग्राम पंचायत उरनी एवं मीरु जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित “कल्पा एवं पूह वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता” परियोजना के तहत “चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता” विषय पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन लोक निर्माण विभाग विश्राम गृह, उरनी के परिसर में किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत उरनी एवं मीरु के 50 किसानों एवं उरनी वन खंड के फ्रंट लाइन फील्ड स्टाफ ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री विजय नेगी (मुख्य अतिथि), डॉ पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), श्री मन मोहन सिंह (वन परिक्षेत्र अधिकारी), श्री मोहन सिंह (खंड अधिकारी कल्पा), श्री भगवान सिंह (वन खंड अधिकारी उरनी), वन रक्षक प्रकाश चंद एवं पंचायत प्रधान श्री अनिल कुमार (उरनी) एवं श्री नरेंद्र कुमार (मीरु) भी उपस्थित रहे।

डॉ स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), डॉ पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों, पंचायत प्रधानों एवं सभी प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में पधारने पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेशों में वानिकी के क्षेत्र में शोध कार्य कर रहा है। साथ ही साथ उन्होंने संस्थान में होने वाले शोध कार्यों एवं वर्तमान गतिविधियों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया। अपने संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने यह भी कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्रोत होने के साथ-साथ



से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्रोत होने के साथ-साथ

उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न अंग है। हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है जिससे न केवल वृक्षों को अत्याधिक क्षति पहुँच रही है अपितु प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ-2 पैदावार में भी कमी हो रही है। यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेंगे और लोग इससे होने वाले सभी प्रकार के लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जायेंगे। इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्याधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके। इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवार्य भी प्राप्त होती रहेंगी।

मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), किन्नौर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है और कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस कड़ी में बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना "चिलगोजा" के अंतर्गत आज इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की इस पहल कि सराहना की और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला से आग्रह किया कि वे किन्नौर की अन्य विलुप्त होती प्रजातियों जंगली चूली, बेमी एवं औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए भी इस तरह के जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करें।



उन्होंने नाबार्ड बैंक की तरफ से वित्तीय सहयोग का आश्वासन भी दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे। उन्होंने लोगों के आग्रह पर नाबार्ड के विभिन्न योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। इसके अतिरिक्त उन्होंने लोगों के अनुरोध पर उरनी में हो रहे भूमि कटाव में चिलगोजा पौधरोपन कार्य हेतु वित्तीय सहयोग का भी आश्वासन दिया।

इसके उपरांत तकनीकी सत्र के दौरान डॉ स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा को 'चट्टानी पर्वत के विजेता' के नाम से भी जाना जाता है। यह किन्नौर जैसे नाजुक क्षेत्र की ढीली एवं नाजुक मिट्टी के कटाव को रोकने की अत्याधिक क्षमता रखता है। चिलगोजा प्रजाति के नष्ट होने से लोगों को आर्थिक नुकसान होगा अपितु यहाँ के लोगों को सामाजिक एवं पर्यावरणीय नुकसान भी होगा। उन्होंने 'चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता' एवं 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को विस्तृत जानकारी दी तथा प्रतिभागियों से कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। साथ ही साथ उन्होंने पंचायत प्रधानों एवं लोगों से अनुरोध भी किया कि वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्रामवासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश दें ताकि चिलगोजा के वृक्षों को कम क्षति पहुंचे एवं प्राकृतिक पुनर्जनन बढ़ सकें



डॉ. पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'कीटों और रोगाणुओं से चिलगोजा का बचाव' विषय पर जानकारी देते हुए कहा कि कीटों की बहुत सारी प्रजातियां मुख्यतः *Diorycytria abietella* एवं *Plodia interpunctella* चिलगोजा के शंकुओं एवं बीजों को अत्याधिक नुकसान पहुंचाती है तथा इनके नुकसान से चिलगोजा को बचाने के लिए इनके संक्रमित छाल, शाखाओं एवं शंकुओं को काट कर जला देना चाहिए ताकि यह इन्हें और नुकसान न पहुंचा पायें। उन्होंने लोगों को अवगत करवाया कि चिलगोजा के कीटों और रोगाणुओं के प्रबंधन के लिए संस्थान ने प्रभावी नियंत्रण उपाय विकसित कर लिया है जो कीटों और रोगाणुओं के प्रबंधन में कारगर हैं। लाइट एवं फीरोमोन्स ट्रेप शंकुओं में लगाने वाले कीटों एवं जैव कीटनाशक जैसे कि नीम बीजों में लगाने वाले कीटों के प्रबंधन में प्रभावी हैं।



श्री मन मोहन सिंह (वन परिक्षेत्र अधिकारी), ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को "चिलगोजा के नर्सरी तकनीक एवं रोपण" एवं 'चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवत्ता के पौधों के चयन की आवश्यकता' के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने लोगों को बताया कि चिलगोजा किन्नौर के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है तथा वर्तमान में बहुत से मानवजनित खतरों के कारण यह भविष्य में विलुप्त हो सकता है। इसलिए वन विभाग एवं स्थानीय लोगों साथ में मिलकर चिलगोजा का पौध रोपण करना होगा ताकि चिलगोजा के नये जंगल तैयार हो पायें। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि यदि वनों में अच्छी गुणवत्ता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को अवश्य दें ताकि वे उसी गुणवत्ता वाले पौधों की नर्सरी तैयार कर सकें। जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानों को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा। इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएँ भी उनके समक्ष रखी एवं उन्होंने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।



श्री मोहन सिंह (खंड अधिकारी) ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होंने स्थानीय बोली में 'शी मा ली री ग्यामिगसा शांग माँ ली री ग्यामिगसा' अर्थात् चिलगोजा जन्म, मरण, शादी-ब्याह, त्योहारों इत्यादि के लिए अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में चिलगोजा की भारी कमी के कारण शादी-ब्याह में चिलगोजा की मालाओं के स्थान पर खातग पहनाया जा रहा है जोकि चिलगोजा की पैदावार की लगातार गिरावट एवं हमारे पारंपरिक संस्कृति के विलुप्त होने का संकेत है। साथ ही साथ उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे शवों को जलाने के लिए चिलगोजा की लकड़ी न काटें।



श्री भगवान सिंह (वन खंड अधिकारी) ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को चिलगोजा की दैनिक उपयोगिता के बारे में अवगत करवाया तथा वर्तमान में हो रहे अंधादून दोहन के भावी प्रभावों के बारे में बताया तथा उरनी गाँव में हो रहे भूमि कटाव को रोकने में चिलगोजा की क्षमता से लोगों को अवगत करवाया। उन्होंने गाँव वालों से अनुरोध किया कि वे चिलगोजा जंगल बढ़ाने के लिए सतत कटाई एवं पौधरोपण करके अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।



इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए पंचायत प्रधान श्री अनिल कुमार (उरनी) एवं श्री नरेंद्र कुमार (मीरु) ने संस्थान के प्रयास की सराहना की और कहा चिलगोजा के जंगलों के संरक्षण के लिए जो पहल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने की है उससे उनके गाँव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि चिलगोजा के संरक्षण के लिए वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्राम वासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को



सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश देंगे ताकी प्राकृतिक पुनर्जनन बड़े। उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

अजय कुमार, कनिष्ठ परियोजना अध्येता एवं कुमारी ईशानी, परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को तोड़ने की विधि' के बारे में फील्ड डेमोन्स्ट्रेशन के माध्यम से बताया । इसी दौरान पाँच मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर भी पंचायतों को प्रदान किये गये ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों तथा किसानों- बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबाई), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया ।



प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां





